सीमा रंगा इन्द्रा

नारी हूँ

भावनाएं भरी है मुझमें,नदिया सी बहती नारी हूँ।
खुशबू फैलाती जीवन में,आंगन की फुलवारी हूँ।।

कोमल मेरा ह्रदय रहे है,जब भी मैं माँ बन जाती हूँ
घर के हर कोने-कोने में,पल-पल में लहराती हूँ
मात बहन बन पूजी जाती,सबकी बनी दुलारी हूँ।
भावनाएं भरी है मुझमें,नदिया सी बहती नारी हूँ।।

कुल की मर्यादा की खातिर,बनती मैं दुर्गा,काली हूँ
खींच लाऊं मैं पति काल से,इतनी करती रखवाली हूँ
चाहे जितना जोर लगा ले,नहीं कभी जग से हारी हूँ
भावनाएं हैं भरी है मुझमें,नदिया सी बहती नारी हूँ।।

मत भूलो तुम सीमा पर हिम,बन डटी सदा में रहती हूँ
लक्ष्मीबाई,झलकारी की,सदा कहानी मैं कहती हूँ
बात वतन पे आ जाएं तो,झांसी जैसी चिंगारी हूँ
भावनाएं भरी है मुझमें,नदिया सी बहती नारी हूँ।।

युगों-युगों तक परचम मेरा,सदा जगत में लहराता है
कवि सदा कलम से मेरा ही,गुणगान हमेशा गाता है
कठिनाई से कर मुकाबला,पीड़ा पर भी भारी हूँ
भावनाएं भरी है मुझमें,नदिया सी बहती नारी हूँ।।

प्यार-प्रेम जो भी करता है, दिल में मैं उसे बसाती हूँ
मेरी पीड़ा जान गया जो,उसकी बन इठलाती हूँ
मनोभाव जो समझ गया है,उसकी सदा आभारी हूँ।
भावनाएं भरी है मुझमें,नदिया सी बहती नारी हूँ।।

अनुराग मिश्र ग़ैर

ग़ज़ल

वकालत कौन मेरी कर रहा है,
सरल मसला पहेली कर रहा है।

किसे दरकार है घी की बताओ,
ये अंगुली कौन टेढ़ी कर रहा है।

न कोई चांद है दीपक न जुगनू,
तू रातें क्यूं घनेरी कर रहा है।

फ़साना है पता किसको बताओ?
कहानी कौन पूरी कर रहा है।

हमारी आंख का जादू सितमगर,
तेरी काया सलोनी कर रहा है।

किसे है यार चूल्हे से अदावत,
ये लकड़ी कौन गीली कर रहा है।

न आयेगा कभी वो ग़ैर वापस,
मिलन की बात झूठी कर रहा है।